ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-1* February- 2021
Innovation The Research Concept

ब्रिटिश शासन में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आधुनिक शिक्षा का विकास तथा प्रभाव : मध्य वर्ग के उदय के विशेष सन्दर्भ में

Development and Influence of Modern Education in Western Uttar Pradesh under British Rule: With Special Reference To The Rise of The Middle Class

Paper Submission: 03/02/2021, Date of Acceptance: 23/02/2021, Date of Publication: 25/02/2021

बी0डी0 शुक्ला
सह प्राध्यापक,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डा0 बी0 आर0 ए0 वि0वि0,
आगरा, उ०प्र०, भारत

शीलेन्द्र कुमार
शोधार्थी
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डा0 बी0 आर0 ए0 वि0वि0,
आगरा, उ०प्र०, भारत

सारांश

उत्तर प्रदेश भारत का हृदय स्थल रहा है। यह मात्र एक भौगोलिक इकाई नहीं है। एक विचारधारा, जीवन शैली, चिन्तन परम्परा, उदात्त भावना एवं विराट की अनुभूति भी है। 1937 से 1950 तक इसे संयुक्त प्रान्त (युनाइटेड प्रविन्सेज) के नाम से जाना जाता था। भारत के इस हृदय स्थल उत्तर प्रदेश का कुल क्षेत्रफल का आधे से भी अधिक हिस्सा गंगा के क्षेत्र अंग एवं अधिकांशतः गंगा और यमुना के दोआब में स्थित है जो कि मुजफ्फर नगर, मेरठ, बुलंदशहर, अलीगढ़, मथुरा, आगरा, फर्रूखाबाद, मैनपुरी, इटावा, एटा, बंदायू, मुरादाबाद तथा शाहजहाँपुर जिलों से मिलकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश का निर्माण करता है। ब्रिटिश शासन में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के विकास की गति धीमी रही। औपनिवेभिक हितों की पूर्ति करने वाली शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत स्त्री, तकनीकी तथा उच्च शिक्षा के विकास के प्रयास सीमित ही रहे थे। पश्चिमी शिक्षा के फलस्वरूप पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यद्यपि मध्य वर्ग का उदय अवश्य हुआ। वकील, अध्यापक, डॉक्टर, पत्रकार तथा लेखकों जैसे लोगों ने राष्ट्रवादी भावना को बढ़ाने में अभीश्ट योगदान दिया।

Uttar Pradesh has been the heart of India. It is not just a geographical unit. There is also an ideology, lifestyle, thinking tradition, sublime feeling and great feeling. From 1937 to 1950 it was known as United Provinces. More than half of the total area of Uttar Pradesh, this heartland of India, is located in the Ganges region and mostly in the Doab of Ganga and Yamuna which are Muzaffar Nagar, Meerut, Bulandshahar, Aligarh, Mathura, Agra, Farrukhabad, Mainpuri, Etawah. , Consisting of Etah, Bandayu, Moradabad and Shahjahanpur districts, forms western Uttar Pradesh. The pace of development of education in western Uttar Pradesh under British rule was slow. Efforts for the development of women, technical and higher education were limited under the education system that fulfills the formal interests. Western education, however, resulted in the rise of the middle class in western Uttar Pradesh. People like lawyers, teachers, doctors, journalists and writers contributed a great deal in promoting nationalist sentiment.

मुख्य शब्द : संयुक्त प्रान्त, मैकाले घोषणा पत्र, वुड डिस्पैच, विश्वविद्यालय आयोग, मध्यम वर्ग।
United Provinces, Macaulay Declaration, Wood Dispatch, University Commission, Middle Class.

प्रस्तावना

ब्रिटिश शासनकाल में आधुनिक शिक्षा की नींव तब पड़ी जब मैकाले स्मरणपत्र को स्वीकार करते हुए लार्ड विलियम बैंटिक ने 1835 में नयी शिक्षा नीति लागू की। अर्थात् सरकार यूरोपीय साहित्य को अंग्रेजी माध्यम द्वारा उन्नत करे।

1813 के आज्ञा पत्र में कम्पनी द्वारा भारत में शिक्षा पर कम से कम से 1 लाख रूपये प्रतिवर्ष व्यय का प्रावधान किया गया था।

1833 आज्ञा पत्र में 10 लाख प्रतिवर्ष का प्रावधान था। 1835 में मैकाले ने अंग्रेजी माध्यम से यूरोपीय साहित्य तथा विज्ञान का प्रचार करने का प्रयास किया गया। भारतीय अंग्रेज पैदा करना ही ब्रिटिश शिक्षा नीति का लक्ष्य था। इसी क्रम में अधोगामी निस्पन्दन सिद्धान्त 19 जुलाई 1854 में चार्ल्स वुड के डिस्पैच में प्रत्येक प्रान्त में शिक्षा विभाग की स्थापना के साथ–साथ कलकत्ता, मद्रास तथा बम्बई विश्वविद्यालयों की स्थापना का प्रस्ताव था। शिक्षण संस्थाओं को अनुदान, स्त्री शिक्षा के प्रयास भी शामिल किये गये थे। 1882 में हंटर कमीशन द्वारा शिक्षा के बारे में उपबन्ध किये गये। भारतीय शिक्षा आयोग द्वारा प्राथमिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा, शिक्षण संस्थाओं को आर्थिक अनुदान देने का प्रस्ताव रखा गया। 1902 से 1937 मध्य ब्रिटिश शिक्षा का प्रयास धीमा ही था। 1902 में थामस रेले की अध्यक्षता में भारतीय आयोग की स्थापना की गई। विश्वविद्यालय 1904 में विश्वविद्यालय अधिनियम पारित हुआ।

1823 से 1921 के मध्य भारत में कुल 17 महाविद्यालय स्थापित हुए। 1922 से 1947 के मध्य इनकी कुल संख्या 21 थी। 1823 में आगरा कॉलेज की स्थापना पं0 गंगाधर शास्त्री ने की थी। इसमें ब्रिटिश सरकार का कोई योगदान नहीं था। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह संयुक्त प्रान्त का पहला शिक्षण संस्थान था। पश्चिम में आगरा विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1927 में हुई। अलीगढ़ विश्वविद्यालय की स्थापना 1920 में की गई। 1937 में आगरा में एस0एन0 मेडीकल कॉलेज की स्थापना की गई।

उत्तर–पश्चिमी प्रान्त (आधुनिक उत्तर प्रदेश) के ले. गवर्नर जेम्स टॉमसन (1843–1853) ने देशी भाशा द्वारा ग्राम शिक्षा की योजना बनायी। छोटे–छोटे अंग्रेजी स्कूल बन्द कर दिये गये। अंग्रेजी शिक्षा केवल कॉलेजों तक सीमित रह गयी। 1854 में मथुरा कलेक्टर ने जमींदारों को शिक्षा के जोड़ा, उनके अनुदान से प्राथमिक स्कूलों की स्थापना की गई, यह प्रयोग काफी सफल रहा। 1856 के वुड डिस्पेच के बाद शिक्षा में और भी उन्नति हुई। 1905 तक पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आगरा, अलीगढ़, बरेली, मेरठ में सरकारी कॉलेज स्थापित हो चुके थे। इनके अतिरिक्त आगरा मे सेंट जॉस कॉलेज, सेंट पीटर्स कॉलेज, विक्टोरिया कॉलेज तथा अलीगढ़ में मुस्लिम ऐंग्लो ओरिएन्टल कॉलेज की स्थापित हो चुके थे। इसके अतिरिक्त चर्च मिशन सोसायटी, बेपटिस्ट मिशन, अमेरिकन मेथोडिस्ट मिशन आदि मिशनरीज द्वारा तथा भारतीयों द्वारा अनेक स्कूलों की स्थापना पश्चिमी उत्तर प्रदेश में की गयी थी।

इतने प्रयासों के बाद भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जिस तीव्र गति से सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव नहीं हुआ। उस तीव्र गति से यहां आधुनिक शिक्षा का विकास नहीं हो पाया। 20वीं शताब्दी के आरंभ में इस क्षेत्र में साक्षरता दर लगभग 5 प्रतिशत थी। महिला साक्षरता तो 1 प्रतिशत से भी कम थी।

यद्यपि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आधुनिक शिक्षा का विकास, अन्य प्रान्तों से अधिक रहा है। इसका मुख्यकारण पश्चिमी उत्तर प्रदेश का आर्थिक रूप से सम्पन्न होना था। जिसने आधुनिक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं विस्तार को सम्भव बनाया।

19वीं सदी में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जैसे–जैसे आधुनिक शिक्षा का विस्तार हुआ, उसी के समकालीन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में मध्यम वर्ग का भी उदय हुआ। पश्चिमी उत्तर प्रदेश का मध्यम वर्ग अपनी कर्मशीलता व शैक्षणिक स्थिति की सुदृढ़ता से सम्पूर्ण प्रान्त की तुलना में 19वीं सदी के प्रारम्भ से ही अपनी सशक्त भूमिका की ओर अग्रसर था। जोकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् और अधिक सारभूत स्थिति को पाने में सक्षम रहा। अतएव् यह कथन गलत न होगा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आधुनिक शिक्षा के विकास के फलस्वरूप यहां का मध्यम वर्ग ने न केवल अपनी आदर्श स्थिति को प्राप्त किया वरन् इस वर्ग ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश को भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप में योगदान भी दिया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ब्रिटिश शिक्षा नीति का उद्देश्य भारतीय अंग्रेज पैदा करना ही था। इस मध्य वर्ग ने ब्रिटिश प्रशासन की इस सम्बन्ध में कुछ सीमा तक सहायता भी की।

आधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग ने पाश्चात्य संस्कृति का अध्ययन किया और इस संस्कृति के बौद्धिक और प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों धारणाओं और सत्य को अंगीकार किया। इस नवीन बुद्धिजीवी वर्ग के उदय का मुख्य कारण था–क्षेत्र में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार, ईसाई मिशनरियों की भूमिका एवं अंग्रेजों द्वारा अपने शासन को मजबूत बनाने के लिए एक ऐसे वर्ग की आवश्यकता जो पश्चिम के आधुनिक एवं उदारवादी विचारों से परिचित हो। ब्रिटिश प्रशासन यह आशा करते थे कि आधुनिक विचारों से परिचित वह वर्ग अंग्रेजी शासन के मानवीय पहलुओं का आम जनता में प्रचार करेगा। और इस कारण अंग्रेजी शासन अधिक दृढ़ और स्थायी बन सकेगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 19वीं शताब्दी के प्रथम कुछ दशकों में शिक्षित वर्ग की संख्या बहुत कम थी। जब अंग्रेजी शासन ने यहां अधिकारिक विद्यालय, महाविद्यालय खोले और उनके साथ ईसाई मिशनरियों ने भी इस दिशा में प्रयास आरंभ किए। तब जाकर बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग सामने आया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. 19वीं सदी में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शिक्षा के विकास के विविध चरणों का अध्ययन करना।
2. ब्रिटिश शिक्षा नीति के विभिन्न प्रावधानों का विवरण प्राप्त करना।
3. पश्चिमी उत्तर प्रदेश में ब्रिटिश शासन में शिक्षा प्रसार के फलस्वरूप मध्य वर्ग के उदय का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

अग्रवाल, एस0पी0 (1985), डेवलपमेन्ट ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया : ए हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ एजूकेशन बिफोर एंड ऑफ्टर इन्डिपेन्डेंस, कन्सेप्ट पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

इस पुस्तक में ब्रिटिश भारत में प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में प्रयासों की तुलना स्वतन्त्र भारत के प्रयासों से की गई है। साथ ही स्त्री शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, भारतीय भाषा तथा साहित्य के प्रति ब्रिटिश नीति के नकारात्मक व्यवहार पर भी प्रकाश

डाला गया है। महात्मा गांधी की वर्धा स्कीम तथा राष्ट्रीय शिक्षा के प्रयासों पर भी लेखन किया गया है।

चन्द, जगदीश (2007), एजूकेशन इन इंडिय ड्यूरिंग ब्रिटिश पीरियड, शिप्रा पब्लिकेशंसन, दिल्ली।

इस पुस्तक में मैकाले का आज्ञा पत्र (1835) बुड का आज्ञा पत्र (1854) इंडियन एजूकेशन कमीशन (1882) लार्ड कर्जन के समय में 1904 का विश्वविद्यालय आयोग, सैडलर कमीशन (1917–1919), 1935 का भारत सरकार अधिनियम, 1937 में गांधी जी का वर्धा प्रस्ताव था 1944 में सार्जेन्ट रिपोर्ट का विवरण दिया गया है।

सिंह, वाई0के0 (2007), हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजूकेशन सिस्टम, ए0पी0एच0 पब्लिशिंग कारपोरेशन नई दिल्ली।

इस पुस्तक में लेखक ने विलियम जोंस द्वारा 1784 में स्थापित एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना से लेकर 1813 का आज्ञा पत्र, 1835 का मैकाले का आज्ञा पत्र, 1854 का वुड का आज्ञा पत्र आदि के प्रावधानों का व्यापक सर्वेक्षण किया है।

बासु, बी0डी0 (2012), हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इंडिया अन्डर दि रूल ऑफ दि ईस्ट इण्डिया कम्पनी, ओरियन्ट लौंगमैन, दिल्ली।

लेखक ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के उद्देश्यों तथा भारतीयों द्वारा स्वयं तकनीकी तथा परम्परागत शिक्षा के विकास के प्रयासों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। कम्पनी शासन में शिक्षा का उद्देश्य अपने हितों तक सीमित था। फलस्वरूप एक मध्यम वर्ग का उदय होता है जिसमें वकील, शिक्षक तथा सरकारी कर्मचारी थे। जिन्होंने ब्रिटिश प्रशासन को सहयोग दिया। **नुरूल्ला, सैयद (2012), ए हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन ब्रिटिश पीरियड, फारगैटन बुक्स, दिल्ली।**

इस पुस्तक में ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन से लेकर ब्रिटिश शासन काल तक के सभी प्रकार के शैक्षणिक प्रयासों का उल्लेख किया गया है। लेखक ने आलोचनात्मक के साथ लेखन किया है।

नायर, प्रमोद के0 (2019), कोलोनियल एजूकेशन एंड इंडिया 1781–1945, रॉटेलेज, टेलर एंड फ्रांसिस बुक्स।

1780 से 1947 के मध्य ब्रिटिश काल में शिक्षा के विकास पर लेखन किया गया है। अंग्रेजी भाषा, साहित्य विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास पर आलोचनात्मक विवरण कई विद्वानों के शोध पत्रों के रूप में संकलित किया गया है।

नायर, जे0पी0 (1976), भारतीय शिक्षा का इतिहास, मैकमिलन, नई दिल्ली।

इस पुस्तक में विस्तार से प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत तथा आधुनिक भारत में शिक्षा की प्रगति से जुड़े विविध पक्षों पर लेखन किया गया है। ब्रिटिश शिक्षा नीति के अन्तर्गत स्त्री शिक्षा, प्रारम्भिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के विकास पर भी लेखन कार्य किया गया है।

निष्कर्ष

19वीं सदी में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बुद्धिजीवियों की भूमिका निर्णायक रही। इस सशक्त मध्य वर्ग ने प्रदेश को एकान्वित किया और अनेक प्रगतिशील सामाजिक धार्मिक सुधार आन्दोलनों का संगठन किया। ये राजनीतिक राष्ट्रवादी आन्दोलन के जनक, प्रणेता, संगठन कर्ता और अग्रणी थे। आत्मत्याग और अनेक कष्टों के बावजूद इस वर्ग ने जनता के बीच शैक्षिक एवं प्रचारात्मक कार्य के द्वारा स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद के विचारों को अधिकारिक लोगों तक पहुंचाया। उन्होंने राष्ट्रीयता और जनतंत्र की भावनाओं से ओतप्रोत प्रादेशिक साहित्य और संस्कृति को योगदान दिया। इनके बीच से अनेक वैज्ञानिक, कवि, इतिहासकार, समाजशास्त्री, वकील, पत्रकार, अध्यापक, अर्थशास्त्री आदि थे। इसी वर्ग ने नवीन भारत की जटिल समस्याओं को समझा एवं उनका निदान प्रस्तुत करने का प्रयास किया। सही अर्थों में वे ही आधुनिक भारत के निर्माता थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्निहोत्री, रवीन्द्र, 1993, भारतीय शिक्षा : दशा और दिशा, केदारनाथ रामनाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ।*
2. *अग्निहोत्री, रवीन्द्र, 2001, आधुनिक भारतीय शिक्षा – समस्याएं और समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।*
3. *अग्रवाल, जे0सी0, 1991, स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली।*
4. *उपाध्याय, डॉ0 प्रतिभा, 1999, भारतीय शिक्षा के नवीन प्रवृत्तियाँ, शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।*
5. *अहमद, आई, 2003, एजूकेशनल डेवलपमेन्ट ऑफ माइनॉरीटिज इन इंडिया, जे0बी0जी0 तिलक (सम्पादन) की एजुकेशन, सोसायटी एंड डेवलपमेन्ट : नेशनल एंड इंटरनेशनल पर्सपेक्टिव, नई दिल्ली।*
6. *नायर, प्रमोद के0 (2019), कोलोनियल एजूकेशन एंड इंडिया 1781–1945, रॉटेलेज, टेलर एंड फ्रांसिस बुक्स।*
7. *नायर, जे0पी0 (1976), भारतीय शिक्षा का इतिहास, मैकमिलन, नई दिल्ली।*
8. *नुरूल्ला, सैयद (2012), ए हिस्ट्री पीरियड, फारगैटन बुक्स, दिल्ली।*